"ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग"

(निबंध)

वर्ग- 'क'

(1)

शिक्षा जीवन को सरल एवं अर्थपूर्ण बनाने का आधारभूत स्तंभ है। शिक्षा एक सच्चे मित्र की तरह है जो किसी भी परिस्थिति में साथ नहीं छोड़ती। मानव यदि शिक्षा को अपना परम मित्र बना लेता है तो उसका जीवन आनंदमय एवं कल्पनाओं से भरा होता है। शिक्षा के विकास में भावनाओं का महत्व सबसे ज़्यादा होता है, क्योंकि शिक्षा का स्तर वहीं होता है जहाँ प्रेम, संस्कार एवं कल्पना होती है। यही कारण है कि ऐसा कहा गया है-

कर्त्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान
शिक्षा से ही मिल सकता है, सर्वोपरि सम्मान।
और साथ ही -

जिस समाज में हो शिक्षित सभी नर-नारी,
सफलता, समृद्धि खुद बने उनके पुजारी।

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है। शिक्षा का स्वरूप बड़ा व्यापक है जिसमें ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति का समावेश होता है। यह शिक्षा ही है जो बालक के अंदर निहित तत्वों को बाहर की ओर अभ्यासित करती है। थोड़ा व्यापक दृष्टि से देखें तो शिक्षा आजीवन चलने वाली एक प्रक्रिया है।

महात्मा गाँधी के शब्दों में - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा का उत्कृष्ट विकास है।" इस तरह शिक्षा का वास्तविक अर्थ - व्यक्तिगत निर्माण, संस्कृति की रक्षा और समाज की उन्नति होता है।

भारतीय समाज शिक्षा और संस्कृति के मामले में प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध रहा है। शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व भी सौंपा गया है। महर्षि अरविंद ने एक बार शिक्षकों के लिए कहा था कि - "शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं, वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में परिवर्तित करते हैं।"

यदि हम आज की बात करें तो देखेंगे कि समाज भी परिवर्तन पर टिका है समयानुरूप वहाँ भी बदलाव की प्रक्रिया चलती रहती है यही वजह है कि शिक्षा जो समाज का एक आवश्यक और अनिवार्य तत्व है उसमें भी समयानुसार परिवर्तन होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि भोजन-पानी जितनी आवश्यक शिक्षा भी है क्योंकि इसी के द्वारा विद्यार्थी या बालक जीवन कौशल सीखता है। यह भी सच है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी अभूतपूर्व बदलाव आया है साथही यह भी सत्य है कि शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन मात्र बनती जा रही है।

थोड़ा समय का पहिया उलटा घुमाते हैं और पीछे चलते हैं जहाँ हम देखते हैं कि भारत में वर्तमान आधुनिक शिक्षा का राष्ट्रीय ढाँचा एवं प्रबंध औपनिवेशिक काल और आज़ादी के बाद के दौर में ही खड़ा हुआ है। सन 1968 में बनी भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर ज़ोर है कि 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाए और इसी संदर्भ में एक अप्रैल 2010 में शिक्षा का अधिकार (RTE) भी एक कानून बना और इसके अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को नजदीकी विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की प्राप्ति का अधिकार होगा।

समय-समय पर इन विभिन्न सरकारी नीतियों का पालन होता रहा और शिक्षण प्रक्रिया चलती रही परंतु पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विकास के कारण ऑनलाइन शिक्षण संस्थाएँ खुलीं साथ ही शिक्षण संस्थानों में भी बच्चे जाकर प्रत्यक्ष रूप से भी शिक्षा ग्रहण करते रहे।

परंतु समय का चक्र कुछ ऐसा आया कि पिछले वर्ष जब विश्व कोरोना जैसी महामारी के आगे विवश हो गया और तब इस covid-19 का जो भयावह रूप सामने आया उससे कोई भी अनभिज्ञ नहीं। आज इस महामारी ने हमारे जीवन के हर पक्ष को बुरी तरह

प्रभावित किया, शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं रहा। कोरोना की भयावहता को देखकर ही 15 मार्च से सभी स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय बंद कर दिए गए और तब पूर्णरूपेण शिक्षा का स्वरूप बदल गया। ऑन लाइन शिक्षा के द्वारा कोर्स खतम करने का सरकारी आदेश आया। विगत 6-7 महीनों से शिक्षार्थी इसी ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

इस दिशा में सरकार ने स्वयं अनेक प्लेटफॉर्म जैसे - स्वयं ई, पी-जी-पाठशाला, किशोरमंच, डिजीटल लाईब्रेरी, दीक्षा आदि ऐप का प्रयोग करने के निर्देश दिए हैं।

इसी ऑनलाइन शिक्षा को आज हम विद्यार्थियों के जीवन से इस कदर जुड़ा हुआ पाते हैं कि लगता है इस वैश्विक संकट के समय इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय ही नहीं, जिससे विद्यार्थी शिक्षण प्रक्रिया से जुड़े रहें, उनका यह बहुमूल्य सत्र और समय व्यर्थ न हो जाए, उनकी शिक्षा पर इस कठिन समय का कुप्रभाव न पड़े।

'ऑन लाइन शिक्षा' जो आज के बदलते हुए समय की माँग है, जिसमें इलेक्ट्रानिक डिवाइस और डिजीटल मीडिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण की जाती है। बुनियादी इंटरनेट, ऑडियो, वीडियो की जानकारी मात्र होने से भी छात्र ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। आज की इन विषम परिस्थितियों में छात्र ऑनलाइन शिक्षकों के निर्देशानुसार ही शिक्षा प्राप्ति में जुटे हैं, वे अपना विभिन्न पाठ्यक्रम पूरा कर रहे हैं दूसरी ओर खेल-खेल में ज्ञानप्रद कंप्यूटर कार्यक्रमों का निर्माण हुआ और हो रहा है।

कोरोना से अलग हटकर भी यदि हम देखें तो भारत जैसे गरीब देश में ऑनलाइन शिक्षा एक जरूरत बनकर उभरी है क्योंकि इसके विकल्प से स्कूलों पर दबाव कम होगा और माता-पिता एवं बच्चों को भी अपने-अपने तरीके से पढ़ने-पढ़ाने की आज़ादी होगी।

अब तो U.G.C. ने भी यह सुझाव दे दिया है कि भविष्य में जब भी शैक्षिक कार्यक्रम हो तब दो दिन ऑनलाइन शिक्षण गूगल मीट, वेबेक्स, जूम इत्यादि

तकनीकी के द्वारा, अगले दो दिन विद्यार्थी स्कूल या कॉलेज में प्रत्यक्ष शिक्षा ग्रहण करें और एक दिन का प्रोजेक्ट वर्क।

तात्पर्य यह है कि ऑनलाइन शिक्षा आज के समय के अनुसार विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है। इससे समय एवं पैसे (आने जाने का व्यय) की बचत होती है।

इसका दूसरा पहलू भी है कि भारत जैसे गरीब देश में आधी जनसंख्या गाँवों में रहती है जहाँ इस ऑनलाइन शिक्षण के महत्वपूर्ण घटक यानि मोबाइल डेटा या इंटरनेट आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, साथ ही स्पीड (गति) की भी समस्या मुँह बाए खड़ी रहती है। इसके साथ रेडिएशन का खतरा, नेत्रों की ज्योति पर असर, सामाजिक वातावरण में अध्ययन न करने से सबके साथ सामंजस्य की समस्या, अकेलापन, अवसाद आदि अनेक समस्याएँ हैं। खेल, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, कक्षा संबंधी कार्यक्रम भी छूट गए हैं इनसे उनका समग्र विकास भी बाधित है।

परंतु इन सबके बावजूद ऑनलाइन शिक्षण ही एकमात्र उपाय है जीवन में आगे बढ़ने का और देश की भावी पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल करके अच्छे नागरिक बनाने का। कोरोना का यह संकट जल्दी समाप्त होने वाला नहीं ऐसे में सामाजिक दूरी बनाए एवं शिक्षा प्राप्ति का मुख्य साधन ऑनलाइन शिक्षा ही है। पूरे विश्व में यह मत बन रहा है कि कोरोना के साथ ही जीना है क्योंकि जहाँ चुनौती होती है, वहाँ समस्या होती है, परंतु वहीं उसके समाधान भी निहित होते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा था कि- "जीवन में आए अवसरों को व्यक्ति साहस एवं ज्ञान की कमी के कारण समझ नहीं पाता।" ऐसी स्थिति में हमें साहस एवं ज्ञान दोनों का परिचय देना होगा और ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहन देना होगा।

इस प्रकार की शिक्षा से विद्यार्थी तरह-तरह से ज्ञान प्राप्त कर सकता है, समय का बंधन नहीं विभिन्न पाठ्यक्रम सीखकर सर्टिफिकेट आदि भी प्राप्त कर सकता है अपने ज्ञान का विस्तार कर सकता है, विशाल पठन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। दूसरे पर्यावरण की दृष्टि से भी ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भरता से कॉपी-किताब की जरूरतें कम होंगी।

परंतु साथ ही देश की मातृभाषाओं में सभी विषयों की सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध कराना एक चुनौती अवश्य है परंतु असंभव नहीं। इसके साथ साइबर क्राइम के प्रति सावधान करने वाले पाठ्यक्रम को महत्व देना होगा, पाठ्य-क्रमों में बदलाव एवं कौशल शिक्षा को शामिल करने से इस ऑनलाइन शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

इस तरह यह ऑनलाइन शिक्षण देश और समाज के लिए हितकारी होगा। समय की माँग एवं विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य से जुड़ी यह ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को रुचिकर एवं आकर्षक तरीके से शिक्षाप्राप्ति के अवसर भी प्रदान करती है। यही कारण है कि आज की इन परिस्थितियों में यह ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग बन चुकी है इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है।

यह मेरी मूल रचना है।

आभा श्रीवास्तव
प्राथमिक शिक्षिका (SS)
प० ऊ० के० विद्यालय-1,
तारापुर

{EMPID No - 2544
वर्ग - 'क'}

नाम - प्रतिमा
कर्मचारी संख्या - 3301
विद्यालय का नाम - परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय - 5, मुंबई
दिनांक - 25.09.2020

48½/50

ऑन लाइन शिक्षण विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग

शिक्षा लोगो के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना हर एक देश के नागरिको का अधिकार है। शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते पर अपने करियर का निर्माण करता है। शिक्षण और अन्य महान आविष्कारों मे प्रगति के कारण 1950 की तुलना मे शिक्षा आज बहुत विविध है। आजकल वर्तमान जीवन मे ऑनलाइन शिक्षा का बोलबाला है। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जहां शिक्षक दूर से और दुनिया से किसी भी कोने से इंटरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। शिक्षक स्काइप, जूम इत्यादि एप्प के ज़रिये वीडियो कॉल करते है और बच्चे लैपटॉप या कंप्यूटर पर शिक्षक को देख और सुन सकते है। शिक्षक बच्चो को पढ़ाने के लिए अपने कम्प्यूटर की स्क्रीन शेयर करते है जिससे बच्चे घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर पाते है।

लॉकडाउन के इस वक़्त जहाँ सभी शिक्षा केंद्र बंद है। वहां ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी जगह बना ली है। आज दुनिया के सारे देशो के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे है। ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए अच्छी और तीव्र गति की इंटरनेट कनेक्टिविटी की जरूरत है।

शिक्षक दूरस्थ शिक्षा मे वीएच एस वीडियो, डीवीडी और इंटरनेट के पाठ्यक्रमों के अनुसार बच्चो को पढाते है। 1993 मे ऑनलाइन शिक्षा कानूनी कर दी गयी और यह एक अनोखा तरीका है जिसके माध्यम से सभी उम्र के छात्र पढ सकते है। इंटरनेट की सहजता के कारण वर्षो से ऑनलाइन शिक्षा लोकप्रिय हो रही है।

आज की वर्तमान स्थिति मे बच्चे स्कूल और कॉलेजो मे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे है लेकिन ऑनलाइन शिक्षा ने रास्ता काफी आसान कर दिया है। बच्चे निश्चिंत होकर घर पर अपनी पढाई पूरी कर पा रहे है। कुछ बच्चे दूर शिक्षको के घर या कोचिंग संगठनो मे जाकर पढाई नहीं कर पाते है। वह ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से अपनी पढाई पूरी करते है और परीक्षा देकर ऑनलाइन डिग्री हासिल कर लेते है। विद्यार्थी ऑनलाइन पढते है और ऑनलाइन परीक्षा देकर अपनी निश्चित डिग्री प्राप्त कर लेते है।

ऑनलाइन शिक्षा से हम सिर्फ भारत मे नहीं विदेशो मे दी जाने वाली ज़रूरी शिक्षा हासिल कर लेते है। इससे हमारा ज्ञान काफी विकसित होता है। ऑनलाइन शिक्षा की वजह से विद्यार्थियों को कहीं जाना नही र पड़ता और इससे यात्रा के समय की बचत हो जाती है। अपने सुविधा अनुसार छात्र वक़्त का चुनाव कर ऑनलाइन क्लासेज मे शामिल हो जाते है।

ऑनलाइन शिक्षा मे विद्यार्थी शिक्षक द्वारा ली गयी क्लास को रिकॉर्ड कर सकते है। जिससे कक्षा के पश्चात विद्यार्थी रिकॉर्डिंग को पुनः पुनः सुन सकते है कही शंका हो तो वे झिझक शिक्षक से दूसरे क्लास मे पूछ सकते है। इससे संकल्पना या कांसेप्ट छात्रों को समझ आ जाता है। ऑनलाइन शिक्षा मे किसी प्रकार की विषय संबंधित समस्या हो तो शिक्षक से ऑनलाइन पूछ सकते है। इसके लिए कही जाने की जरूरत नहीं है। ऑनलाइन पढ़ाने के लिए शिक्षक ने कुछ कार्यक्रमो को फ्लैश कार्ड और गेम जैसे बनाया है जो छात्र के सीखने के अनुभव को बढ़ाता है।

सिविल सेवा परीक्षा और इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसी पढ़ाई शिक्षा संस्थानो मे नही बल्कि ऑनलाइन हो रही है। यह कहना मुश्किल है कि कोरोना काल कब तक चलेगा और इसलिए विद्यार्थियों को सामाजिक दूरी का पालन करना आनेवाली है। इस परिस्थिति मे ऑनलाइन शिक्षा एक बेहतर विकल्प है। आज कल तेजी से बढ़ती हुई दुनिया के पास समय की कमी है। और वेब के माध्यम से दी जाने वाली सभी सेवाएं लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

न सिर्फ स्कूल, कॉलेज जाने वाले बच्चे बल्कि ऐसे विद्यार्थी जो प्रतियोगिता परीक्षाओ की तैयारिया कर रहे है। उनको भी ऑनलाइन कोचिंग की सुविधा प्राप्त हो रही है। अब वो भी घर पर बैठे बैठे अपनी आने वाले

प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी आराम से कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा से घर बैठे बैठे पढ़ने की सुविधा तो मिलती ही है, साथ में समय पैसे दोनों की बचत होती है। ऑनलाइन पढ़ाई में अनेक ऐसे ऐप हैं जैसे गूगल अर्थ, वीडियो, चित्र, एनिमेटेड चित्र, गूगल मैप्स। जिनका प्रयोग कर पढ़ाई को और भी दिलचस्प बनाया जा सकता है। इसमें शिक्षक व विद्यार्थी एक दूसरे को पीडीएफ फाइल, वेब लिंक, वीडियो बनाकर भी भेज सकते हैं।

कई कंपनियों द्वारा लर्निंग एप्स भी बनाए गए हैं। जैसे मेरीटनेशन, वाईजू टॉपर्स आदि। ये लगभग कक्षा 1 से लेकर कक्षा 12 तक के सीबीएसई के पाठ्यक्रम को ऑनलाइन प्रदान करते हैं। और इनके द्वारा बनाए गए एप्स में शिक्षकों का पढ़ाने का तरीका इतना बेहतरीन है कि बच्चे आराम से उस विषय को समझ जाते हैं। इनकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि अपने ऐप से जुड़ने वाले बच्चों से पर्सनली संपर्क में रहते हैं। और कोई समस्या होने पर इनके टीचर बच्चों की समस्याओं का समाधान तुरंत करते हैं। यहाँ तक कि कुकिंग, सिलाई, कढ़ाई, क्राफ्ट, ड्राइंग, पेंटिंग आदि से संबंधित क्लासेज भी अब ऑनलाइन दी जा रही हैं।

आजकल तकरीबन सभी लोग हर एक एक्टिविटी के लिए 24×7 अपने स्मार्टफोन, लैपटॉप और टैबलेट पर ऑनलाइन सर्च अपना रहे हैं। ऐसे में, एजुकेशन फील्ड भी अब इसका अपवाद नहीं रहा है।

आजकल हमारे टीचर्स और स्टूडेंट्स अपने एजुकेशनल और प्रोफेशनल कोर्स, असाइनमेंट या प्रैक्टिकल्स के लिए काफी हद तक ऑनलाइन लार्निंग का सहारा ले रहे हैं। मसलन देश - विदेश के नामी प्रसिद्ध स्कूल कॉलेज और यूनिवर्सिटीज के साथ विभिन्न मैनेजमेंट एंड टेक्निकल इंस्टीट्यूशन भी अपना स्टडी मटीरियल, असाइनमेंट, सैंपल पेपर्स, टाइम टेबल सहित सभी जरुरी और महत्वपूर्ण सूचनाएं अपने स्टूडेंट्स और उनके गार्जियन्स के साथ ऑनलाइन साझा करते हैं। आजकल अधिकतर लोग क्लासरूम टीचिंग के बजाय ऑनलाइन लर्निंग को ज्यादा इफेक्टिव मानने लगे हैं। दरअसल इन दोनो ही एजुकेशनल मेथड्स के अपने-अपने फायदे और नुकसान हैं।

हम ऑनलाइन शिक्षा को सिंक्रोनस और असिंक्रोनस इन दो भागो मे विभाजित करते हैं।

सिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था : इसे हम रियल टाइम लर्निंग या लाइव टेलीकास्ट लर्निंग के नाम से भी जानते हैं। इस शैक्षिक व्यवस्था में एक ही समय मे शिक्षक और छात्रो के मध्य संवाद स्थापित होता है तथा अध्ययन की गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। ऑडियो और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, लाइव चैट तथा वर्चुअल क्लासरूम आदि इसके उदाहरण हैं।

असिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था : इस शैक्षिक प्रणाली मे छात्र अपनी स्वेच्छा से जब चाहे दी गई अध्ययन सामग्री को पढ़ या देख व सुन सकता हैं। इसमे रिकॉर्डेड क्लास, वीडियो, ऑडियो, ई बुक्स, वेब लिंक्स, प्रैक्टिस सेट आदि सम्मिलित हैं।

शिक्षा का अधिकार 2009 देश के प्रत्येक बच्चे को निशुल्क एवं अनिवार्य एवं बाल शिक्षा का अधिकार देता है। शिक्षा व्यक्ति के चहुमुखी विकास की प्रथम शर्त मानी जाती है। ऑनलाइन शिक्षा आज के युग की लोकप्रिय प्रणाली है। इसके सारे लाभ है तो कुछ हानियाँ भी है, जिन्हे हम इस प्रकार समझ सकते है:-

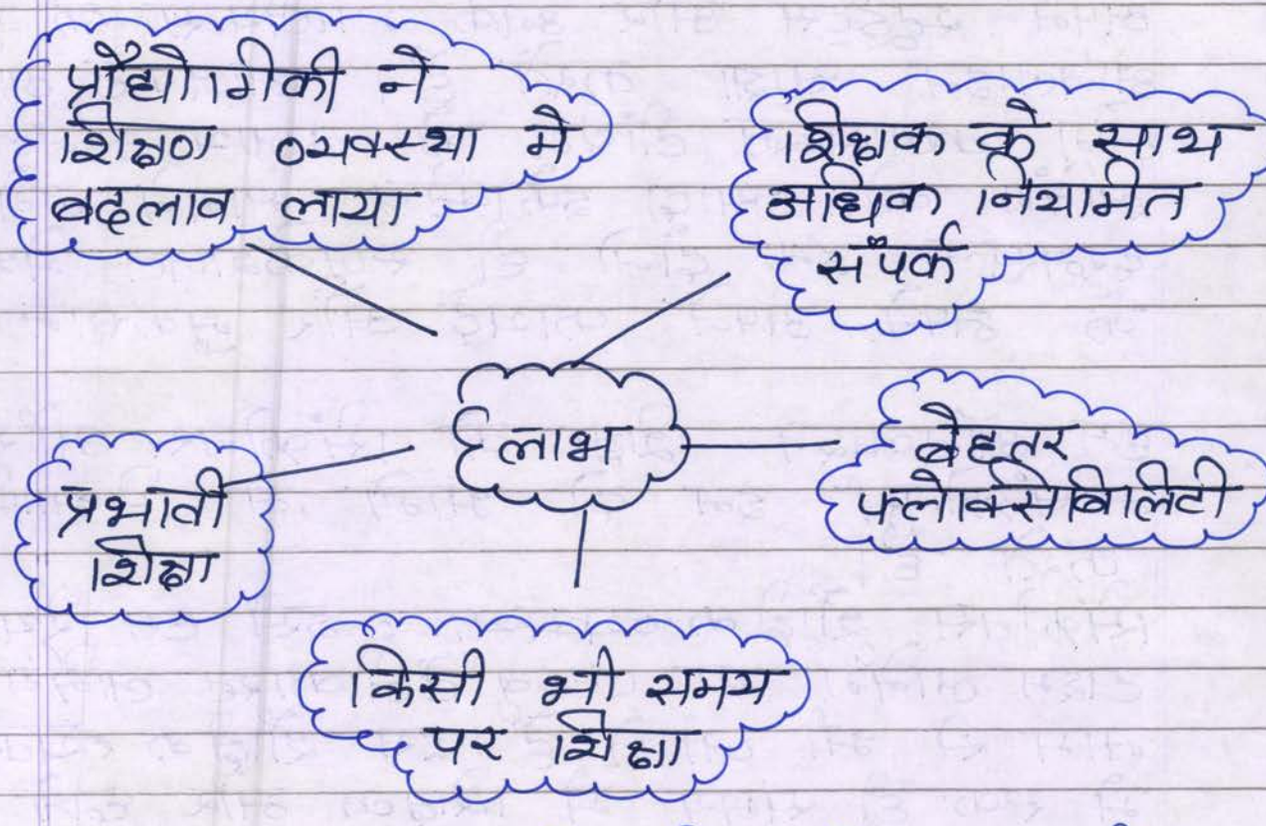

छात्र अवसर अपने फोन के मदद से शिक्षको से हर समय संपर्क साध लेते है। शिक्षक जब चाहे क्लास रख सकता है और स्थगित भी कर सकता है। इसमे यात्रा नही करनी पड़ती व समय की बचत होती है। इसमे शिक्षक को विभिन्न प्रकार से बच्चो को पढ़ाने का भरपूर मौका मिलता है। इंटरनेट का आसानी से उपलब्ध होना ऑनलाइन शिक्षा के लिए वरदान के रूप मे साबित हुआ है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए बढ़िया विकल्प है जो काम करते हुए या घर की देखभाल करने के साथ अपनी पढ़ाई जारी रख पाते हैं। अपनी सुविधा अनुसार वह ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यह एक नयी प्रकार की शिक्षा है जो हर देश अपना रहा है। विद्यार्थीओं को ज़रूरत है कि वह मन लगाकर पढ़े और अपना और अपने देश का भविष्य उज्ज्वल करे। जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षा को पाने में असमर्थ हैं उनके लिए निशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था करने की जरूरत है ताकि शिक्षा से कोई वंचित ना रहे। ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया माध्यम है जहाँ छात्रों को अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

क्र.प.सं.-3252
वर्ग-(क)

48/50

ऑनलाइन शिक्षण - विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग

मानव सभ्यता को समय-समय पर आपदाओं से जूझना पड़ा है और हर बार मनुष्य ने इन आपदाओं पर विजय प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। आधुनिक युग में लगभग प्रत्येक सौ वर्षों पर किसी वैश्विक महामारी ने जीवन को नए सिरे से परिभाषित किया है। वर्तमान संकट ने दुनिया को प्रकृति-प्रेम, स्वच्छता, सादगी, अनुशासन और संयम जैसे मूल्यों को पुनः याद दिलाने का कार्य किया है।

वर्तमान में हम विज्ञान और तकनीक के आधुनिकतम चरण में प्रवेश कर चुके हैं और इंटरनेट इसका आधार है। इंटरनेट का प्रवेश जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में हो चुका है और इसके प्रभाव को हम क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर रूप में नहीं देख सकते बल्कि यह बहुआयामी है।

इंटरनेट क्रांति ने शिक्षा के पारंपरिक स्वरूप को काफ़ी हद तक प्रभावित एवं परिवर्तित किया है। शिक्षा अब कक्षाओं तक सीमित नहीं रह गयी है बल्कि इसका दायरा अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक हो चुका है। पिछले कुछ समय से दुनिया जिस वैश्विक महामारी से जूझ रही है, उसका शिक्षा क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। शिक्षण संस्थाएँ लम्बे समय से बंद हैं लेकिन शिक्षण प्रक्रिया अनवरत चल रही है। इस परिदृश्य में

शिक्षा क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण एक ऐसे विकल्प के रूप में उभरा है जिसका शिक्षा-व्यवस्था को पूर्णतः बंद होने से बचाने में महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा-जगत में ऑनलाइन शिक्षण पहले से अस्तित्व में है लेकिन इस संकट काल में इसका जितना प्रचलन हुआ वह अभूतपूर्व है। जब दुनिया भर में करोड़ों छात्रों के वर्तमान और भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा हुआ था, उस समय ऑनलाइन शिक्षण एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में उभरा।

ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा और शिक्षकों को घरों में बैठे विद्यार्थियों से जोड़ने का कार्य किया। इससे छात्रों और अभिभावकों के मन में जो अनिश्चितता और हताशा के भाव गहरा रहे थे, वे कुछ हद तक कम हुए। छात्रों को कक्षा-शिक्षण जैसा वातावरण देने के प्रयास हुए, जो सराहनीय हैं।

विद्यालय छात्रों के लिए न सिर्फ़ शिक्षा ग्रहण करने का स्थान है बल्कि विद्यालय का परिवेश छात्रों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अप्रत्याशित संकट की घड़ी ने छात्रों को विद्यालय के परिवेश से, उनके समाज से दूर कर दिया। लम्बी अवधि तक सीमित माहौल में, समाज से अलग-थलग रहने का असर सभी आयु वर्ग के लोगों पर पड़ा किन्तु इस माहौल ने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर अपेक्षाकृत गहरा असर डाला है।

ऑनलाइन शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को डिजिटल रूप से ही सही लेकिन उनके शिक्षकों और उस वातावरण से जोड़ने का प्रयास है, जो वातावरण बच्चों को प्रिय है, जहाँ उनके समवयस्क हैं, साथी हैं, मित्र हैं। विद्यालय छात्रों की एक अपनी ही दुनिया होती है जहाँ वे सपने देखते हैं और उन्हें पूरा करने के प्रयास भी करते हैं। ऑनलाइन शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को सिर्फ पुस्तकीय पाठ्यक्रम पूरा करवा देने की कवायद न होकर उन्हें उनकी इस दुनिया से जोड़ने की दिशा में एक पहल भी है।

स्कूली छात्रों ने अपने जीवन में ऐसे संकट का कभी अनुभव नहीं किया था, जिसके कारण इतने लम्बे समय तक उन्हें विद्यालय से दूर रहना पड़ा हो। आरंभ में छात्र ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया को लेकर सहज और गंभीर नहीं थे किन्तु समय के साथ छात्र ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता और महत्व को समझने और स्वीकार करने लगे। अपने बच्चों की शिक्षा और उनके भविष्य को लेकर आशंकित अभिभावक भी धीरे-धीरे इस परिवर्तित शिक्षा व्यवस्था को स्वीकार कर रहे हैं। अब शिक्षा जगत से जुड़े सभी लोग इस बात को मानने लगे हैं कि ऑनलाइन शिक्षण भविष्य की शिक्षा-व्यवस्था की तस्वीर है। यह एक तात्कालिक विकल्प तक सीमित न रहकर विद्यार्थी जीवन के अभिन्न अंग के रूप में विकसित होता रहेगा।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि ऑनलाइन शिक्षण शैक्षणिक जगत में आया एक क्रान्तिकारी बदलाव है जो अब एक सशक्त विकल्प के रूप में हमेशा बना रहेगा।

ऑनलाइन शिक्षण आज विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग अवश्य है किन्तु इसकी चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। संसाधनों की कमी, जागरूकता का अभाव, योजनाओं के क्रियान्वयन में समन्वय न होना, प्रशासन की उदासीनता और सामाजिक तथा आर्थिक पिछड़ापन ऑनलाइन शिक्षण की सफलता के मार्ग में प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके अतिरिक्त निरंतर डिजिटल माध्यमों व उपकरणों के सम्पर्क में रहने और उनके प्रयोग से हाथों के व्यवहार और स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव, आभासी कक्षाओं के वातावरण से उपजी नीरसता, शिक्षकों पर प्रभावी शिक्षण और आभासी कक्षाओं को जीवंत बनाने का दबाव, अभिभावकों का असंतोष आदि ऐसी चुनौतियाँ हैं, जिनका निदान और समाधान किए बिना ऑनलाइन शिक्षण का सफल क्रियान्वयन संभव नहीं है।

एक तरफ़ जहाँ अनेक प्रश्न हैं, शंकाएँ हैं वहीं दूसरी तरफ़ शिक्षाविदों से लेकर साधारण व्यक्ति भी इस बात पर एकमत हैं कि ऑनलाइन शिक्षण भविष्य के शैक्षणिक परिदृश्य का महत्वपूर्ण अंग सिद्ध होगा।

अपनी सीमाओं और चुनौतियों के बावजूद ऑनलाइन शिक्षण पारंपरिक शिक्षण के ऐसे विकल्प के रूप में उभरा है जिसने छात्रों और शिक्षकों के बीच की दूरी को कम करने का कार्य किया है, साथ ही छात्रों को कभी-भी, कहीं से भी सीखने व पढ़ने की स्वतंत्रता दी है। हम कह सकते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण, शिक्षा क्षेत्र का एक नया आयाम है जो संभावनाओं से भरा है और यदि इस दिशा में सार्थक प्रयास किए जाएँ तो यह शिक्षा से वंचित लाखों-करोड़ों छात्रों के लिए वरदान सिद्ध होगा।

122

ऑनलाइन शिक्षण - विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग।

विद्यालय नाम - परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय -2 तारापुर
वर्ग - २ब
कर्मचारी पहचान संख्या - 3202.

48/50 अनुराधा 23/01/2021

विश्व कि उत्पती के साथ ही विश्व निर्माण का कार्य शुरु हो गया। इस विश्व निर्माण के कार्य में सारी नैसर्गिक क्रियायों ने भाग लिया जैसे की बडे - बडे ग्रहों का निर्माण हो, बडे स्फोट हो, अंतरिक्ष मे टकराव हो या त्सुनामी, लावा, ज्वालामुखी जैसी घटनाओं ने सारे विश्व को नचाया, लाखो - करोडो सालों तक तब जाके विश्व का निर्माण धीरे - धीरे शुरु हो गया।

इस विश्व निर्माण मे तारामंडल बने, फिर उसमे करोडों - लाखों ग्रह और फिर उसपर जीव का निर्माण इन सब घटनाओं को बदलने मे काफी समय लगा। फिर अलग - अलग जीव और उसमे बहुत सालों बाद मनुष्य ने पृथ्वी पर जन्म लिया। जन्म से ही मनुष्य को बहुत तगडा संघर्ष करना पडा और इस संघर्षसेवह निकलकर आज विकास की राह पर सिढीयाँ चढ रहा है, आज भी उसका विकास पुरा नही हुआ है।

लेकिन इस दिशा में उसने अनगिणत चीजों की खोज की मानवता के लिए। मानवता की सुखी जीवन के लिए। सबसे पहले तो हमे पता है की मनुष्य को जीने के लिए तीन चीजों की जरुरत है। अन्न, वस्त्र और निवास. इन तीनो चीजों की खोज के बाद मनुष्य ने और दुसरे चीजों की खोज शुरु की। इसमें बाद में शिक्षण और स्वास्थ को बुनियादी चीजों मे जोडा गया। क्योंकी बुनियादी चीजों के बिना अपना जीवन सहज नही हो पाएगा।

विश्व मे भारत को बडा ही प्राचीन इतिहास रहा है उसमें सबसे प्रथम नाम आता है सभ्यता, संस्कृति, शिक्षण इन बातों का.

प्राचीन भारत काल मे भारत की शिक्षा सारे विश्व में प्रसिद्ध थी। सबसे पहले गुरुकुल शिक्षा, उसके बाद नालंदा, तक्षशिला जैसे महान विद्यालय जिनका अभ्यास करके पाश्चात्य देशों ने अपने वहाँ विद्यालय बनावाए। ऐसी उच्चविद्याविभूषित संस्कृती वाला देश शिक्षा के क्षेत्र मे कभी पीछे नही था, नही है और नही रहेगा। किंतु अब विज्ञान-और तंत्रज्ञान के अविष्कार ने सारे क्षेत्रों को पुरी तरह से बदल दिया। चाहे वो अंतरिक्ष, परमाणू, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, ऑयेमाबाईक्स, शिक्षण इ. इन सारे क्षेत्रों का चेहरा पुरी तरह से बदल गया है, इसलिए हमे शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना अनिवार्य हो गया है। और इसमे यह कारगर भी साबित हुआ है।

इन दिनों हर दिन नए-नए अविष्कारों की खोज हो रही है जैसे मोबाईल हो, ॲप्स हो या और बहुत सारी चीजें इनके माध्यम से हमारा जीवन सरल हो गया है। इसी सरल जीवन इ.स. २०१९ से कोरोना जैसी महामारी ने मानवता को थोडासा रोक दिया है। मनुष्य अचानक से थम गया है लेकिन इसमे भी उसने अपना काम विकास करना, संघर्ष करना छोडा नही है।

बहुत सालों से शिक्षा के क्षेत्र मे हम नए नए उपकरणों का उपयोग कर रहे है लेकिन उसका सबसे ज्यादा उपयोग इन दिनों करना पड रहा है। क्यूं की इस महामारी की वजह से विश्व की सारी गतिविधीयाँ रुक सी गई थी जो आज धीरे-धीरे शुरु हो रही है।

कुछ साल पहले से ही बड़े संस्थानों ने ऑनलाइन शिक्षा शुरू की है, लेकिन उसका इतना प्रभाव सामान्य जनजीवन पर नहीं था लेकिन इस महामारी की वजह से ऑनलाईन शिक्षा का प्रयोग करने पर हमें सोचने पर मजबुर करना पड़ा।

और इन दिनों ऑनलाइन शिक्षा ही कारगर साबित होती नजर आ रही है। और यह अभी सभी विद्यार्थियों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। यह शिक्षा, शिक्षा का ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से शिक्षक घर बैठे देश के किसी भी कोने में बैठे हुए बच्चों को पढ़ा सकते है। (बहुत सालों से कोटा (राजस्थान) से ऐसी शिक्षा दी जा रही है) इसमें छात्र अपने समय के अनुसार देख सकते है।

सबसे पहले हम अगर मानते है कि यह विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग है, तो हमें इसके फायदे देखने होंगे। तभी हम ऐसा कह सकते है।

1) <u>शिक्षक - विद्यार्थी संपर्क</u> - इस शिक्षा से शिक्षक-विद्यार्थीयों का संपर्क बेहतर हो जाता है क्यूंकी किसी भी वक्त विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से पढाई कर सकते है, जोम के माध्यम से शिक्षकों से बात कर सकते है। शिक्षक अपने वक्त के अनुसार बच्चों से संवाद कर सकते है और उसमें नई-नई तकनीकों का उपयोग करके पाठ सरल बना सकते है।

2) <u>प्रभाव</u> - इससे शिक्षा का प्रभाव अधिक बढ जाता है, इंटरनेट के माध्यम से नई-नई चीजों का आविष्कारन करके शिक्षक पढा सकता है।

3) तकनिकी की सहजता - इस दौर मे तकनिकी की सहजता से हम कहीं से भी पढाई कर सकते हैं मोबाईल, कंप्युटर्स जैसे उपकरनों ने हमारा जीवन सरल हो गया है। भारत की कुल 60% जनसंख्या आज भी गाँवों मे बसी हुई है। लेकिन आज कुछ अपवाद छोडकर लगभग सभी जगह पर इंटरनेट कनेक्टिविटी और मोबाईल, T.V. पहुँच चुके है तो इसी माध्यम से हम उन बच्चों तक भी शिक्षा पहुँचा सकते है जो बच्चे रास्तों के कारण या दुरी के कारण विद्यालय पहुंच नही सकते थे।

4) नैसर्गिक विनाशकारी घटनाओं के वक्त - हम अक्सर कहते है कि जो दु:ख मे साथ खडा होता है वही सही होता है। हमारे जीवन ऐसी कई घटनाएँ आती है, जिसमे हमारा जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है जैसे कि कोरोना महामारी, बाढ, भुस्खलन, सुनामी इन जैसी आपदाओं मे और बडे-बडे मौसम के बदलावों मे हम विद्यालय मे पहुंच नही सकते तब ऑनलाईन शिक्षा उन बच्चों को वरदान के रूप मे साबित होती है।

5) सुविधाजनक - इस सुविधा से आप अपने घर पर ही रहकर बातचीत कर सकते है। अच्छे क्लासरूम की तरह यहाँ पर भी एक दुसरे से बातचीत कर सकते है। अभी कोविड महामारी मे घर से बाहर निकलना स्वास्थ के लिए हानिकारक है तो ऐसी चीजों में ऑनलाईन शिक्षण की प्रक्रिया बच्चों के लिए एक वरदान साबित हो जाती है।

6) सस्ता - मेरे विचार से यह प्रणाली सस्ती भी है, आने - जाने का ट्रान्सपोर्ट का खर्च की आवश्यकता नही पड़ती है, पुस्तकों का ऑनलाईन मिल जाना इन चीजों से काफी सस्ती पढ़ाई हो सकती है।

7) कम पेपर का इस्तेमाल - ऐसा कहा जाता है कि पेपर बनाने के लिए वृक्षों को काटा जाता है, इस प्रणाली मे पेपर का इस्तेमाल कम हो जाता है। जैसे परिक्षाएँ डिजिटल माध्यम से हो जाती है।

किसी भी पहलु के लाभ और हानी होते है। हमे कमसे कम हानी करके उसपे विचार करके, उसको कम करके नए युग के लिए, नई पिढी के लिए ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव बढाना होगा और यह विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग बेहतर तरीके से बनाना होगा।

25-9-20

ऑनलाइन शिक्षण - विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग (शिक्षकों हेतु)✓

वर्ग - ग ✓

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय - 6 ✓ मुंबई

कर्मचारी पहचान संख्या - 2578 ✓

A E C S No. 6 अणुशक्ति नगर Western Sector MUMBAI - 400 094

वुहान ने मचाया तूफान! कोविड - 19 की महामारी एक आँधी जिसके गिरफ्त में सारी दुनिया आगई। सारा काम-काज रुक गया। दफ्तर, होटल, स्कूल विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी), परीक्षा रद्द करदी। सारी दुनिया में लॉकडाउन लागू किया गया। भारत में 24 मार्च को कोविड - 19 रोकथाम के लिए लॉकडाउन लागू किया गया। कोरोना संकट में शारीरीक दूरी बनाए रखकर शिक्षा के लिए तकनीकी प्रयोग है। इससे बच्चों की पढ़ाई का नुकसान ना हो। ऑनलाइन शिक्षा कोरोना संकट के दौर में शैक्षणिक संस्थानों के आगे जो चुनौती है, उसमें ऑनलाइन एक स्वाभाविक विकल्प है।

ब्लैकबोर्ड से लेकर स्मार्टबोर्ड तक यह तकनीक का उपयोग क्लासरूम टीचिंग को मजबूत और रूचिकर बनाने के लिए किया जाता है। लेकिन ऐसे समय में विद्यार्थियों से जुड़ना समय की जरूरत है। लेकिन इस व्यवस्था को कक्षाओं में आमने - सामने दी जानेवाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकल्प बताना यह भारत के भविष्य के लिए अन्यायपूर्ण है।

जब जब समाज का स्वरूप बदला शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन की बात हुई। आज कोरोना संकट के दौर में ऑनलाइन शिक्षा का प्रस्ताव परजोर रखाजा रहा है।

बच्चे अब बैग व बस्ते के साथ विद्यालय नहीं जाते, घर पर ही पूरी पढ़ाई कर रहे हैं। मोबाइल, कंप्यूटर, टेलीविजन आदि उपकरणों पर पढ़ रहे हैं।

घरों में अब इंटरनेट सेवा मुहया करवानी पड़ेगी। कक्षाएं ऑनलाइन कराने के लिए जूम जैसे विवादास्पद वेब प्लेटफॉर्म का सहारा लिया गया, इसमें गूगल मीट, वेबेक्स भी शामील है।

घर में स्कूल जैसा सीन हो गया है। शिक्षक घरसे लींक भेजता है बच्चों के फोन पर, इसतरह बच्चे लींक से ऑनलाइन क्लास में जुड़ते हैं। गूगल और स्काइप के जरिए कक्षाएं होती हैं। यूट्यूब पर ऑनलाइन सामग्री की जाती है। लेक्चर और कक्षा के वीडियो तैयार कर ऑनलाइन डाले जाते हैं। व्हाट्सएप के माध्यम से विद्यार्थियों के समूहों में भेजे जाते हैं। ऑनलाइन परीक्षा, गूगल क्लासरूम और गूगल शीट से बच्चों से करवा रहे हैं। शिक्षक और बच्चे बंद कमरों में पढ़ा और पढ़ रहे हैं। शिक्षक अब वर्चुअल सिखा रहे हैं।

शिक्षा ऑनलाइन पढ़ाई के कारण आकर्षक होगई है। अब शिक्षक की भूमिका कम हो गई है। ऑनलाइन माध्यम से "खुद को सीखें" और "सामुदायिक शिक्षा को प्रोत्साहित करता है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली किसी भी समय विचारों और जानकारी का आदान-प्रदान करने की अनुमति देती है।

ई-लर्निंग उन छात्रों तक पहुंचने में सक्षम है जो अन्यथा अपने पाठ्यक्रम नहीं ले सकते हैं। जैसे के विकलांग, और लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए दरवाजा खोल दियाहै।

ऑनलाइन शिक्षा सुविधाजनक और लचीली है, विशेष रूप से गैर-पारंपरिक छात्रों के लिए

नौकरियों, परिवारों आदि के लिए। यात्रा और समय और पैसा
भी बचता है।

लॉकडाउन के कारण वर्चुअल कोचिंग क्लासों
के प्लेटफॉर्म बाईजूस के संस्थापक बाइजू रविंद्रन
भारत के सबसे युवा अरबपति बन गए।

ऑनलाइन क्लासेस के लिए इंटरनेट का इस्तेमाल
करते हैं। भारत में अब ७० करोड संख्या हो जाएगी,
जो नेट इस्तेमाल करेंगे।

ऑनलाइन पढ़ाई की मजबूरी और आकर्षक
के बीच ये जानना भी जरूरी है कि क्या संख्या
के आधार पर वाकई देश इसके लिए तैयार है।
शहरों मे इंटरनेट है पर ग्रामीण परिवारों में
5 २३ प्रतिशत के पास इंटरनेट उपलब्ध है।

कुछ जानकारों के मुताबिक डिजिटल लर्निंग,
अकेलापन अलगाव और हताशा कर सकता
है। ऑनलाईन लर्निंग एक समन्वयकारी और समावेशी
ढांचा बनाया जाए जिसमे क्लासरूम शिक्षा या
पारंपारिक शिक्षा को आधार मील और डिजिटल
लर्निंग के नवाचार को अनुरूप करने की कोशिश
करे।

ज्यादातर स्कूल और देश के उच्च संस्थानों
ने ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाई करने
तैयार नहीं थे। इसका एक बडा कारण इंटरनेट की
सुविधा, शिक्षकों का ई-लर्निंग का अभाव और
प्रशिक्षण की कमी है। लॉकडाउन के वजह से
रातों रात ऑनलाइन शिक्षा सेवा पर जोर दिया
गया।

6 कई शिक्षकों के पास वाई-फाई, लैपटॉप,
मोबाइल यह सब अपनी जेब खर्च पर निर्भर है।
अगर एक भी बच्चा ऑनलाइन शिक्षा से
वंचित रह जाता है, तो पढ़ाई का यह माध्यम

Empid ID-2578
ग-वर्ग
AECS-6,
Mum

अन्यायपूर्ण होगा। इसके कई कारण है जैसे :-
बहुत से बच्चे गरीब या ग्रामीण घरोंसे है, जिनके पास, २४ घांटे पीने का पानी तक नहीं वह, घरमें ब्राडबेंड सेवा, और उचेत्र यंत्र मुहैया कैसे कराएगा।

केंद्र और राज्य सरकारों को ये प्रतिबध्दता दिखानी चाहिए कि वो आगे चलकर सभी शिक्षण संस्थानों को ई-एजुकेशन को संभव करे।

ज्यादातर स्कूल पूरान अपलोडेड वीडियो जगह-जगह से उठाकर बच्चो को शेयर कर रहे है। सामग्री पाठ्यक्रम अनुरूप न होने के कारण इसे समझने मे बच्चों को परेशानी हो रही है। स्कूल ऐसे भी है जो सुविधा सम्पन्न नहीं है। ऐसे मे वो ऑनलाइन पढाइ करवा पाने मे असमर्थ है।

भारत मे केवल २४ फीसदी घरें तक ही इंटरनेट की उपलब्धत है तो ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता पर स्वय सवाल उठ जाते है।

लाखों लोगोंका रोजगार छूट गया, स्कूल जेलो मे तबदील होगए। कई स्कूल कोविड सेंटर बन गए। ऐसे मे, हमारे जैसे गरीब देश मे समान शिक्षा का अवस कैसे मिलेगा।

विकसित देशों के मुकाबले भारत के हालात बिलकुल जुदा।

अंत मे यह पूरी संभावना है कि आनेवाला समय विद्यार्थियो के लिए चुनौती भरा है। स्कूल और युनिवर्सिटी और पालक यह भी विचार कर रहे है कि स्कूल खुलने के बाद वे किस तरह से काम करेंगे। सामाजिक दूरी अहम होगी और ऑनलाइन शिक्षा को माध्यम एक अहम भूमिका निभाएगी।

(135)

विद्यालय का नाम : शैक्षणिक इकाई, केंद्रीय कार्यालय, परमाणु उर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई

कर्मचारी पहचान संख्या: 3140

वर्ग : ख

$46\frac{1}{2}/50$

अनुराधा 23/01/21

ऑनलाइन शिक्षण : विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग

कुछ दिन पहले सब ठीक चल रहा था। हम अपने कामों में व्यस्त थे। सब निर्धारित काम सुचारू रूप से चल रहे थे।और फिर ख़बरें आने लगी की चीन के वुहान शहर में एक अलग ही तरह की बीमारी फ़ैल रही है जिसमें सास न ले पाने की वजहसे लोगों की मौतें हो रही है। हम चर्चा करने और चीनियों को कोसने में मशगूल थे की किस तरह चीनी लोगों की खाने-पिने की आदतें इसके लिए जिम्मेदार है और खैर मना रहे थे की हम इससे कतही प्रभावित नहीं हो सकते क्योंकी हमारी खान-पान की आदतेंउनसे अलग है।लेकिन हम इस बात से बेखबर थे की,यह बीमारी चीन के एक शहर तक सिमित ना रहकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और हवाई आवागमन की माध्यम से दुनिया भर में फैलकर वैश्विक महामारी का रूप ले रही है। और हमारा भारत देश भी इससे अछूता नहीं रहा है।

इस बीमारी के प्रारंभिक काल मेंजब चीन का वुहान शहर जुज रहा था,लोगों की जानें बचने के लिए पुरे शहर में लॉकडाउन लगा था, लोग अपने ही घरों में बंधिस्त होकर जीने को मजबूर थे, तब इसबीमारी से मरनेवालों की संख्या देखकर हम यहसमज चुके थे की, यह कोही साधारण बीमारी नहीं बल्कि मानव से मानव में संक्रमित होने वाली खतरनाक महामारी है,और हमें इससे बचने के लिए उपाय करने चाहिए। लेकिन जबतक हम इस बात को समज पाते, बड़ी देर हो चुकी थी, कही लोग अंतर्राष्ट्रीय हवाई सफ़र के माध्यम से प्रभावित देशों से यह बीमारी अपने देश में ला चुके थे। साथ ही इस दौरान हम बड़े सरकारी कार्यक्रम, राजकीय समारोह और धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन कर चुके थे। परिणाम स्वरुप इस बीमारी के सामान्य जनता में फ़ैलाने की संभावनाऐ बढ़ चुकी थी। और इसे रोकने के लिए सरकार की तरफ से एक कड़ा कदम उठाया गया... सम्पूर्ण लॉकडाउन।

स्कूलों में ऑनलाइन शिक्षा की सुरुवात

लॉकडाउन,जिसमें हम अपने घरों के बहार नहीं निकल सकते, किसीसे मिल नहीं सकते, अत्यावश्यक सेवाओं को छोड़करसब कुछ बंद हो गया, दुनिया थम सी गयी, स्कुल भी बंद हो गए क्योकि इस बीमारी के संक्रमण से बचाने के लिए दुसरों से सामाजिक दुरी (शारीरिक दुरी के विपर्यास के स्वरुप)बनाये रखना जरुरी था। इससे लोगों का एक दूसरे से संपर्क टूट गया। पहिला, दूसरा, तीसरा ... एक

के बाद एक लॉकडाउन लगते रहे,लेकिन इस बीमारी से बाधित होने वालों की संख्या में कोई कमी नहीं आयी।साथ ही लॉकडाउनसे जनजीवन पूरी तरह प्रभावित हो गया। और इस लॉकडाउन से प्रभावित होने से शिक्षा क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा।देश पर गहरा आर्थिक संकट छा गया। लोगों को रोजी रोटी कमाना और जीवनयापन करना मुस्किल हो गया।और फिर प्रकिया चालू हो गयी अनलॉक की, जिसमें उद्योग, व्यापर, यातायात धीरे- धीरे पूर्ववत् हो रहे थे लेकिन शिक्षा का क्षेत्र अपनी सुनिश्चित पारंपरिक पाठशाला आधारित अध्ययन प्रकिया पर न आ सका। इसका कारण था विद्यार्थीयों में सामाजिक दुरी बनाये रखने की आवश्यकता और वे इस बीमारी से संक्रमित होने की अधिक सम्भावना। और फीर इसके पर्याय के रूप में ऑनलाइन शिक्षा उभर कर आयी।

ऑनलाइन शिक्षा ही क्यों ?

आज हम सब " वुका वर्ल्ड " में जी रहे है (वोलेटाइल, अनसर्टेन, काम्प्लेक्स और अम्बिगुऔस)। ऐसा वातावरण जिसे हम नियंत्रित नहीं कर सकते।जहां कब क्या हो कोई नहीं जानता।हमें हर रोज नयी एवं विपरीत परिस्थिति का सामना करने के लिए तयार रहना पड़ता है।आज के कोविड-१९ के इस महामारी ने हमारे सामने ऐसी ही परिस्थितियां खड़ी की है जीनें हम नियंत्रित नहीं कर पा रहे है। आज पहले की तरह स्कूल जाना, दोस्तों से मिलना, कक्षा में बैठकर अध्ययन करना, आदि संभव नहीं है। लेकिन हम ये भी जानते है की अध्ययन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस महामरी ने हमें शिक्षा क्षेत्र में अध्ययन के नए माध्यम खोजनेके किये मजबूर कर दिया है। इस बात से हम भलीभाती अवगत है की "जरुरत ही अविष्कार की जननी है" और शिक्षा का क्षेत्र हमेंशा से ही नयी समस्याओं पर मात करने में अग्रसर रहा है। इस महामारी में ऑनलाइन शिक्षा को पर्याय के रूप मेंस्वीकार करना अनिवार्य हो गया है, ताकिशिक्षा का कार्य अविरत रूप से चलता रहे, शिक्षक– छात्र एक दुसरे से जुड़े रहकर ज्ञान दान की प्रक्रिया सुगम हो जाये।

ऑनलाइन शिक्षा मेंशिक्षक की भूमिका

कुछ दशक पहलेजब शिक्षा प्रणाली में तंत्रज्ञान का उपयोग नहीं होता था तब किताबें और शिक्षक द्वारा दिया ज्ञान ही नए कौशल शिकने के माध्यम होते थे। शिक्षक शिक्षा के केंद्रस्थान पर थे। शिक्षक जितना ज्यादा अच्छा होगा छात्र भी उतनेही ज्यादा कुशल होंगे यह शिक्षा का सूत्र थे।लेकिन जब से शिक्षा में तंत्रज्ञान का उपयोग होने लगा, शिक्षा शिक्षक केंद्रित से विद्यार्थी केंद्रित होने लगी। शिक्षा में रेडिओ, टेलीवीजन, संगणक, आदि का उपयोग छात्रो के लिए ज्ञान प्राप्त करने के माध्यम बन गए। शिक्षा में इंटरनेट और मोबाइल तंत्रज्ञान का इस्तमाल एक नयी क्रांति ले आया, जिसने शिक्षक के सामने नयी चुनौतिया खड़ी की,जैसे खुद को अपने विषय में अद्यावत रखना, ताकि वे तंत्रज्ञान से अवगत नयी पीढ़ी के छात्रो के अध्ययन सबंधित समस्याओं को हल कर सके और शिक्षा के परिवेश मेंहर दिन बदलते तकनीक और तंत्रज्ञान से अपने आप को ढालना।

आज मोबइल और संगणक पर इंटरनेट की माध्यम से हर विषय की जानकारी उपलब्ध है जिसे छात्र जब चाहे, जहां चाहे सिख सकते है। इसका मतलब यह कतही नहीं की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की कोही अहम् भूमिका नहीं रही, बल्कि वह और भी ज्यादा बढ़ चुकी है। शिक्षक इन माध्यमों की तरह शिक्षा को केवल संचारित करने का कार्य नहीं करते अपितु उसे अपने छात्रों में प्रवर्तित करने का काम करते है।छात्रो को उनके जरुरत के मुताबिक पाठ में अनुकूलन करके देना, उनके लिए सुविधा, सेवा, मार्गदर्शन और सहायता उपलब्ध करने में मुख्य सूत्रधार के रुपे में कार्य करते है। इसलिए उनकी भूमिका तंत्रज्ञान के साधनों की तरह ट्रांसमीटर नहीं बल्कि "फैसिलिटेटर" की है।अब इसे ही देख लीजिये की किस तरह इस महामारी के दिनों मेंशिक्षकों ने अपनी चॉक - ब्लैकबोर्ड वाला पढ़ाने का तरीका छोड़कर ऑनलाइन के तंत्रज्ञान वाले तरीके को अपना लिया है जो कभी इन गैजेट को केवल समय बर्बाद करने का साधन मानते थे। रोज ऑनलाइन लाइव पाठ के लिए कंटेंट जुटाना, उसपर पीपीटी बनाना, वर्कशीट बनाना, और उने व्हाट्सएप, गूगल फॉर्म, ईमेल के माध्यम से छात्रो तक पहुचना, एक हसे में करीबन सौ से देडसौ छात्रो के असाइनमेंट को चेक करने का कार्य बढ़ी कुशलता से कर रहे है। क्योंकी शिक्षक आखिर शिक्षक होता है जो अपना हर काम छात्रों की भलाई के लिए जी जान से करता है।

ऑनलाइन शिक्षा और छात्र

कहा जाता है की दुनिया में अगर कोई चीज शाश्वत है तो वो है बदलाव, यह एक अविरत चलने वाली प्रक्रिया है, जो कभी नहीं रूकती। जो भी उस बदलाव के अनुरूप अपने आप को ढाल लेते है वो ही जीने की स्पर्धा में टिक पाते है। जीवन में बदलाव एक एहं सत्य है और छात्रों को शिक्षा की प्रणाली में हुए बदलाव को अपनाना जरुरी है। इस महामारी में छात्रों की दृष्टिकोण से शिक्षामेंअगर कोई बड़ा बदलाव हुआहै तो यह की कल तक जिस मोबइल को पढ़ाई में बाधक माना जाता था आज उसी मोबइल पर पूरी ऑनलाइन शिक्षा का दारोमदार है। और छात्रो को इस बदलाव को सकारात्मक रूप से लेना चिहिए।उने यह कतही नहीं सोचना चाहिए की ये महामारी चली जाएगी तो ऑनलाइन क्लास भी बंद हो जायेंगे। ऑनलाइन शिक्षण पढ़ाने के तारिकों का एक बदलाव है जिसे हमने भलीभाती अपनाया है। औए ये आगे भी निरंतर चलती रहेगी। इसको बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के निति आयोग द्वारा अटल इनोवेशन मिशन के तहत "अटल तिन्केरिंग लैब" की स्थापना की है जिससे छात्रों को अपने क्रिएटिविटी दर्शाने का मंच प्राप्त हुआ है।

अब छात्रों ने अपने आप को इस तरहसे ढालना चाहिए की वो ऑनलाइन शिक्षण को विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग मान ले।कई स्कुल ऐसे भी है जहा बच्चों को पढ़ने-पढ़ाने के लिए लैपटॉप और टेबलेट गैजेट का उपयोग करना आम बात है।छात्र इस बात से अच्छे से वाकिब है की ऐसे कई मुक्त विद्यापीठ है जो बहुत से पाठ्यक्रम दुरस्त शिक्षा की स्वरुप में ऑनलाइन चालते आ रहे है।साथ ही डिप्लोमा और सर्टिफिकेट स्तर के कही पाठ्यक्रम है हो ऑनलाइन चलते है। बस इस कोविड -१९ की जागतिक माहामारी ने इस

ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को महाविध्यालयों से स्कूली शिक्षा तक पहुचाया है जिसे छात्रों को शिक्षा का मॉडर्न स्वरुप मानकर खुले मन से अपनाना चाहिए।

ऑनलाइन शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका

ऑनलाइन शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका अहम है। उनके बच्चे के लिए उनका घर ही शिक्षा ग्रहण करने का स्थान है। और उनका यह दायित्व बनता है के वे अपने बच्चों को पढाई के लिए उपयुक्त वातावरण प्रधान करे। इसका खास तौर पर ध्यान रखे की जब बच्चा ऑनलाइन क्लास में सामिल हो तो घर में शांतिपूर्ण वातावरण रहे। छोटे बच्चो के माता पिता की यह जिम्मेदारी बनती है के वे उने ऑनलाइन क्लास में जॉइन करा दे तथा क्लास सपन्न होने तक बच्चो के साथ रहे ताकिशिक्षक से दी गयी कोई भी महत्वपूर्ण जानकारी छुट न जाये।इससे भी जरुरी बाब यह है की अपने बच्चो के लिए ऑनलाइन शिक्षा ले अत्यावश्यक साधन सामग्री उपलब्ध कराये। जैसे स्मार्ट फोन, इंटरनेट डाटा आधी।।

ऑनलाइन शिक्षा कितनी कारगर :

ऑनलाइन शिक्षा के अच्छाई की बात करे तो यह शिक्षा उन छात्रों के लिए वरदान बन चुकी है जो लॉकडाउन के कारण स्कुलसे कही दूर स्थित है और महामारी के कारण कही आ-जा नहीं सकतें। उनके लिए शिक्षा में बने रहने का एक आसन माध्यम बन गया है।बड़े शहरों में जहा खाने – पिने और रहने का खर्चा जादा आता है ऐसे छात्रो के लिए खर्च से राहत मिली है। दूर दराज के छात्रो को शिक्षा में सामिल करना संभव हो चूका है। ग्लोबल स्तर पर बच्चो को अपने अन्दर की कलात्मकता को प्रकट करने के लिएमंच मिल गया है जिससे वे दुसरे देशों के बच्चों से संप्रेषण कर सकते है। इनोवेटिव शिक्षकों को प्रभावी तरीके से पढ़ाने का माध्यम मिल गया है। पढ़ने - पढ़ाने का समय शिक्षक और छात्रों की सुविधा नुसार तय किया जा सकता है।

इसके बावजूद ऑनलाइन शिक्षा की कुछ खामियाँ भी है जैसे तय समय पर इंटरनेट नेटवर्क की उपलब्धता न होना– नों नेटवर्क, नों टीचिंग। क्लास के दौरान या अंत में छात्रों ने शिक्षा को कितना आत्मसात किया ये शिक्षक उचित तौर जान नहीं पाते। जो बच्चे पढाईमें कमजोर है उन बच्चों पर ऑनलाइन क्लास के दौरान व्यक्तिगत तौर पर ध्यान देना मुश्किल होता है। एकसाथ सारे छात्रों को स्क्रीन पर देख नहीं पाते, एक छात्र पर ध्यान देने पर दुसरे छात्र क्या कर रहे है यह जान पाना शिक्षक के लिए संभव नहीं होता। छोटे बच्चों के लिए अभिभावकों का साथ रहना जरुरी होता है।

इस बात में कोई शक नहीं की, महामारी ख़त्म होने के बाद हमपढ़ाने के अपने पुराने तरीके को अपनाएँगे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है की ऑनलाइन शिक्षा पूरी तरह खत्म हो जाएगी।हर चीज का अपने परिपेक्ष में परिस्थितियों के अनुरूप खास महत्व होता है। इस महामारी की स्थिति में शिक्षा को सुचारू रूप से चालू रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग बना रहेगा।

147

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL

KALPAKKAM / ANUPURAM

.....Examination 20.....

M.O.	
M.M.	

Name. ..... Roll No. .....

Class & Sec ..... Date .....

Subject ..... Paper .....

No. of Additional Sheets used [ ] Invigilator's Sign. .....

Examiner's Sign..... Checker's Sign. .....

Start writing on this page

नाम : एस. अनीता

विद्यालय का नाम : AECS-1, कलपाक्कम

कर्मचारी पहचान संख्या : 2685

वर्ग : 'ग'

विषय : ऑनलाइन शिक्षण - विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग

48/50

अनुराधा
23/01/2021

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL

KALPAKKAM / ANUPURAM

M.O.	
M.M.	

.....Examination 20.....

Name. ..... Roll No. .....

Class & Sec ..... Date .....

Subject ..... Paper .....

No. of Additional Sheets used [ ] Invigilator's Sign. .....

Examiner's Sign..... Checker's Sign. .....

Start writing on this page

"स्कूल में मस्ती थी
हमारी भी कुछ हस्ती थी
टीचर का सहारा था
दिल ये आवारा था
कहाँ आ गए इस कोरोना के चक्कर में
वो स्कूल ही कितना अच्छा था।"

स्कूल शब्द अपने आप में ही बहुत भावनात्मक है और यह दूसरी ही दुनियाँ है, जहाँ हम अपना आधा दिन पढ़ते हुए गुजारते हैं।

स्कूल में पढने लिखने के आलावा कई तरह की मौज मस्ती, मनोरंजक कार्य जैसे कि खेल, नृत्य, संगीत आदि कर पाते हैं।

स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ हमारी चरित्र और व्यक्तित्व को राष्ट्रनिर्माण के लिये ढाला जाता है। हम स्कूल के वातावरण में काफ़ी तेज़ी से विकास करते हैं।

समाज के निर्माण मे विद्यालय द्वारा एक अहम योगदान निभाया जाता है। इसके बिना कोई भी देश अराजकता की स्थिति में पहुंच जायेगा, इसीलिए

हमारे समाज में विद्यालय एवं विद्यालय में काम करने वाले शिक्षक को एक अहम स्थान प्राप्त है।

परंतु आज दुनिया एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जिसमें विद्या नहीं लोग अपनी जान बचाने पर लगे हुए है। कोविड 19 के चलते हुए इस लॉकडाउन में कई स्कूल, शिक्षा केंद्र बंद है। शुरू में बच्चे खुश लग रहे थे। कोरोना की छुट्टी से मन उनका मचल रहा था परन्तु वक्त गुजरते हालत देरी से समझ आया।

"स्कूल जाने थे ना
स्कूल से परेशान हुआ करते थे
अब स्कूल की याद,
परेशान करती है।"

शिक्षा लोगो के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे बच्चे और बूढ़े बड़ा देर से ही समझ पाए थे। अच्छी शिक्षा देना स्कूल का ही तो कर्तव्य है। सुनामी हो या कोरोना पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला हमेशा जारी रहेगा।

ऐसे वक्त में ऑनलाइन ने ही साथ दिया। ऑनलाइन अध्ययन शिक्षा का एक आधुनिक डिजिटल तरीका है, जहाँ पर शिक्षक और छात्र, उपकरणों

जैसे कि लैपटॉप, टैब, स्मार्टफोन आदि अन्य उपकरणों का उपयोग कर एक दूसरे से बात कर सकते हैं। अध्यपन की यह प्रणाली इन दिनों काफी प्रचलित है, जबकि इस महामारी के फैलने के बाद हमें घर से बाहर न निकलने को कहा गया है।

कोविड-19 महामारी को देखते हुए कई स्कूलों ने ऑनलाइन अध्ययन के तरीके को अपनाया है और इस प्रक्रिया को काफी हद तक सफल भी बनाया है। इसीलिए बेजीजक हम कह सकते है कि ऑनलाइन शिक्षण विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग हो चुका है।

सन 1993 में ऑनलाइन शिक्षा कानूनी कर दी गयी और यह एक अनोखा तरीका है जिसके माध्यम से सभी उम्र के छात्र पढ़ सकते है। लॉकडाउन के इस वक्त जहाँ सभी शिक्षा केंद्र बंद है वहाँ ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी जगह बना ली है।

आज दुनिया के सारे देशों के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे है।

ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जहाँ शिक्षक दूर से और

दुनिया के किसी भी कोने से इंटरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। शिक्षक, स्काइप, जूम आदि एप्प के जरिये वीडियो कॉल करते हैं और बच्चे लैपटॉप या कंप्यूटर पर शिक्षक को देख और सुन सकते हैं। शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने कंप्यूटर की स्क्रीन को शेयर करते हैं जिससे बच्चे घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इंटरनेट की सहजता के कारण वर्षों से ऑनलाइन शिक्षा लोकप्रिय हो गई है। आज की वर्तमान स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा ने, शिक्षा प्राप्त करने का रास्ता काफी आसान कर दिया है।

बच्चें निश्चिंत हो कर घर पर अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहे हैं। वे ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं, परीक्षा भी ऑनलाइन में देकर, डिग्री हासिल कर लेते हैं।

आजकल काफी प्रोफेशनल कोर्सेज ऑनलाइन हो चुका है। ऑनलाइन शिक्षा से हम सिर्फ भारत में ही नहीं विदेशों में दी जाने वाली ज़रूरी शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं।

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL

KALPAKKAM / ANUPURAM

.....Examination 20.....

M.O.	
M.M.	

Name. ..... Roll No. .....

Class & Sec ..... Date .....

Subject ..... Paper .....

No. of Additional Sheets used [ ] Invigilator's Sign. .....

Examiner's Sign..... Checker's Sign. .....

Start writing on this page

ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चे घर बैठे, समय की बचत करते हुए अपनी ज्ञान विकसित कर सकते है। इसके लिए छात्रों को अपनी सुविधा अनुसार वक्त का चुनाव कर ऑनलाइन क्लासेज में शामिल होना पड़ेगा। सुबह से लेकर रात तक अपने कार्यक्रमों की पेटी बनानी होगी। उन्हें इस बात का भी कायल रखना होगा की उनकी मोबइल पूरी तरह से चार्ज हो और उसमें इंटरनेट बनाये रखने की आवश्यकता भी है।

बच्चे अब दोस्तों को कम और मोबइल की मेसीज पर ज़्यादा ध्यान देने लगे है। शिक्षक द्वारा भेजे हुए लिंक समय पर देखना ज़्यादा जरूरी हो चुकी है।

बच्चे कभी रिकॉर्ड किए गए विडीयो देखते है या फिर नोट्स लिखते हैं। ऑनलाइन क्लासेज के बाद भी बच्चे ऑफलाइन नहीं हो पाते। खाते पीते, उठते सोते मोबइल के साथ उनका रिश्ता और मज़बूत हो गया है।

अब बच्चे ऑनलाइन लर्निंग प्रोग्राम की क्लासेज करके अपना कोई भी कैरियर बना सकते हैं। अब उनके पास पूरी दुनिया के विश्वविद्यालयों द्वारा उपलब्ध प्रोग्राम्स और कोर्सेस की विशाल रेंज का ऑप्शन भी मौजूद है।

ऑनलाइन प्रोग्राम्स के खर्च बहुत ही कम होते हैं। ऑनलाइन शिक्षा की वजह से छात्रों को कहीं जाना नहीं पड़ता और इससे यात्रा के समय की बचत के साथ साथ पैसे की बचत भी हो जाती है।

शिक्षक, छात्र के सीखने के अनुभव को बढ़ाते हुए कार्यक्रमों को फ्लैश कार्ड और गेम जैसे प्रस्तुत करते हैं जो वे रेगुलर क्लासेज में नहीं कर पाते।

छात्र अपनी ऑनलाइन शिक्षा को रिकॉर्ड कर उसे कक्षा के बाद पुनः सुन सकते हैं और कांसेप्ट को अच्छे से समझ सकते हैं।

यह कहना मुश्किल है कि कोरोना काल कब तक चलेगा और इसीलिए इंजीनियरिंग और मेडिकल की

कौंसिलींग भी ऑनलाइन कर दी गई है। बारहवीं खत्म करके बच्चे अब डिग्री क्लासेज ऑनलाइन में ही कर रहे है।

ऑनलाइन क्लासेज में बच्चो के साथ, घर के बड़े भी, शिक्षक को सुन रहे होते है। इसीलिए शिक्षक और अधिक ध्यान से पढ़ते है। हर शिक्षक का यही कोशिश होती है कि वह बेहतरीन टूलस का इस्तेमाल करें ताकि बच्चों को सीखने में आसानी हो।

जो छात्र काम करते हुए पढ़ना चाहते है उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया विकल्प है। वे काम करते हुए या घर की देखभाल करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रख सकते है।

अब ऑनलाइन शिक्षा का साथ देते हुए कई लर्निंग एप्प मारकेट में आ चुके है, जैसे बाईजस, मैरिटनेशन आदि ये एप्प सी बी एस सी की सभी कक्षा की विषय सामाग्री प्रदान करता है। इन वीडियोस को देखकर बच्चे मुश्किल पाठ को आसानी से समझ सकते है।

ऑनलाइन शिक्षा भी एक चाक्

के समान है। डाक्टर उसका इस्तमाल बचाने के लिए प्रयोग करता है लेकिन चोर उसी चाकू से जान लेने के प्रयोग में लाता है।

अब ऑनलाइन का इस्तमाल भी बच्चों के हाथ में ही है वे उससे अपनी जिन्दगी बनाने चाहें या बिगड़ना।

हर छात्र मन लगाकर पढ़े और अपना और अपने देश का भविष्य उज्जवल करें।

ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए कैसे अच्छी है?

→ सुविधाजनक:
ऑनलाइन शिक्षा में जुड़ने के लिए एक अच्छे डिवाइस और इंटरनेट की आवश्यकता है।

→ सस्ता:
ऑनलाइन शिक्षा के लिए छात्र को बाहर जाना नहीं पड़ता इसलिए ट्रान्सपोर्ट का खर्चा नहीं होता। पुस्तकें भी हमें डाउनलोड करके मिल जाते हैं। इसमें इंटरनेट की पैसा ही कार्च है।

ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL

KALPAKKAM / ANUPURAM

M.O.	
M.M.	

.....Examination 20.....

Name. ..... Roll No. .....

Class & Sec ..... Date .....

Subject ..... Paper .....

No. of Additional Sheets used [ ] Invigilator's Sign. .....

Examiner's Sign..... Checker's Sign. .....

Start writing on this page

→ सुरक्षित :

ऑनलाइन शिक्षा इस महामारी में छात्रों के लिए एक वरदान है। यह एक सुरक्षित विकल्प है। घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं किसी दूसरे से सम्पर्क जाने की आवश्यकता नहीं है।

→ कम पेपर का इस्तेमाल

क्लासरूम की अपेक्षा डिजिटल शिक्षा से अध्ययन करने में पेपर का उपयोग कम है।

ऑनलाइन शिक्षा के कई फायदों के बावजूद इसके ढेरों नुकसान भी हैं। ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए कैसे अच्छी नहीं है —

→ खुद पर नियंत्रण :

ऑनलाइन शिक्षा का सफलता छात्रों के आचरण पर निर्भर करता है।

→ ईमानदारी पर निर्भर :

छात्र कितने ईमानदार हैं ये उनके

उपस्थिति पर निर्भर है। शिक्षक पाठ सीखने समय छात्र ऑनलाइन होकर भी यदि कुछ और काम करे तो इस विकल्प को वरदान नहीं अभिशाप कहेंगे।

→ पाठ के बारे में ही बातें :
ऑनलाइन कक्षा में शिक्षक केवल पाठ के बारे में ही चर्चा करेंगे। वे अपनी आम कक्षाओं में तथ्य और जोक्स भी शामिल करते हैं। परंतु ऑनलाइन में नहीं।

→ ओवर एक्सपोजर :
ऑनलाइन कक्षा में छात्र इलेक्ट्रानिक गैजेट्स का प्रयोग करते हैं। छात्र इन स्क्रीन को तीन या चार घंटे लगातार देखते हैं, जिससे छात्रों में सिर दर्द एंव आँखो की समस्या देखने को मिलती है।

→ सब के लिए नहीं :
कुछ बच्चे जो गाँव के स्कूल में पढ़ते हैं वहाँ ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन नहीं है।
गरीब परिवार इंटरनेट का खर्चा नहीं उठा सकते हैं। उनके पास कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा

नहीं है।

ऐसे बच्चे जो ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ है उनके लिए वहाँ के नेता कुछ ऐसी व्यवस्था करें ताकि शिक्षा से कोई भी वंचित ना रहे।

अंतः ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया माध्यम है जिससे हर छात्र शिक्षा प्राप्त कर सकता है। लेकिन कोई भी आनलाइन गैजेट्स शिक्षक का स्थान नहीं ले सकता।

सोते हुए को उठाने का
रोते हुए को हँसाने का
हारे हुए को जिताने का
काम एक शिक्षक ही कर सकता है।
जीने की कला
ज्ञान की कीमत
प्यार बाँटने का महत्व
किताब, ऑनलाइन गैजेट्स नहीं
एक शिक्षक ही सिखा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा सिखकर, इस महामारी में अगर मेहनत से नहीं पढ़ाते शिक्षक तो सोचिए क्या होगा हर छात्र का जीवन।

इसलिए हर शिक्षक को मेरा नमन और हर छात्र से हम करते यह उम्मीद की वो देश का नाम रोशन करेगा।

वर्ग - 'ग'

(7)

47/50 अनुशंसा 23/01/2021

राजलक्ष्मी श्रीधर
TGT(SS)
Emp. ID 2238
AECS-1, Tarapur

ऑनलाइन शिक्षण - विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अँग

आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक शिक्षा का महत्व निरंतर बना रहा है। प्राचीन काल से आचार्यो द्वारा ब्रह्मचर्य आश्रम में सभी शिष्यो को समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाती थी। टी. रेमांट (शिक्षा शास्त्री) के अनुसार "शिक्षा विकास का वह क्रम है जिससे व्यक्ति अपने को धीरे धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। शिक्षा मानव जीवन के लिए वैसी है जैसे संगमरमर के टुकडे के लिए शिल्पकला॥

शिक्षा मानव जीवन को सर्वगुण संपन्न और सफल समृद्ध करने तथा सत् चित और आनंद प्राप्ति करता है। विद्यार्थी जीवन वास्तव में मानव जीवन की नींव है। आज कोरोना जैसी महामारी ने पूरे विश्व को ग्रस्त कर रखा है। सभी कार्यों में रुकावट आई। शिक्षा प्रणाली में भी कई प्रश्न चिह्न उठे हैं कि छात्रों को शिक्षा किस रूप में प्राप्त हो जाए।

यह विज्ञान की उन्नति के कारण ही संभव हो सका कि छात्र कोरोना जैसी बीमार से अछूत रहें। विद्यालय न आकर अपने आप को सुरक्षित रखकर शिक्षित भी हो सके ऐसी स्थिति में ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अँग बन गई क्योंकि यही पीढी भविष्य में देश के अच्छे नागरिक बन कर देश को प्रगति के शिखर पर ले जा सकते हैं। शिक्षा बिना छात्र अपँग है।

इस महामारी के बुरे दौर में समय का सही सदुपयोग कर शिक्षा प्राप्त करना सिर्फ ऑनलाईन में

ही संभव है और इसका शिक्षण प्राप्ति में सही उपयोग हो रहा है। आज दुनिया के सारे देशों के बच्चे आनलाइन शिक्षा का उपयोग से आसानी से पढाई कर पा रहे हैं। शिक्षक दूरस्थ शिक्षा में वीडियो, पी.पी.टी, इंटरनेट के पाठ्यक्रमों के अनुसार बच्चों को पढाते है।

1993 में ऑनलाइन शिक्षा कानूनी कर दी गयी और यह एक अनोखा तरीका है जिसके माध्यम से सभी उम्र के छात्र पढ सकते हैं। इंटरनेट की सहजता के कारण वर्षों से ऑनलाइन शिक्षा लोकप्रिय हो रही है। बहुत से विद्यार्थी के लिए शिक्षा का यह नया मेथड एक वरदान साबित हुआ है। इसने पूरी दुनिया में हरेक इंसान के लिए सीखने के काफ़ी अवसर करवाये हैं। हम इस निबंध में आनलाईन लर्निंग से मिलनेवाले कुछ महत्वपूर्ण फायदों के बारे में जान लेते हैं।

लॉकडाऊन के दौरान पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए ऑनलाइन कक्षाएँ जरिया बनी। ऑनलाइन की वजह से बच्चों में पढाई करने की आदत नहीं छूटी और बच्चों ने तकनीक के इस्तेमाल का नया तरिका सीखा। यह अविष्य में वर्क फ्रॉम होम को भी बच्चों में आदत पड़ने में मदद करती है।

पारंपरिक कक्षा सेटिंग में कक्षा की बैठक समय निर्धारित किए जाते हैं जिसमें उन्हें इन स्थिर स्थितियों के आसपास अपने कार्यक्रम को काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। आजकल अधिकतर लोग क्लासरुम टीचिंग के बजाय ऑनलाइन लर्निंग को ज्यादा फायदेमन मानने लगे है। ऑनलाइन कक्षाओं से शिक्षकों ने भी पढाई कराने का नया तरीका सीखा।

"कोरोना के लिए क्यों रोना
हमारा जीवन है सोना
इसी स्थिति में जीना शिक्षा से वंचित न रहना

जब विद्यार्थी कोई ऑनलाइन कोर्स करना चाहते हैं तो उनके पास पूरी दुनिया के विश्वविद्यालयों द्वारा उपलब्ध प्रोग्राम्स और कोर्सेज की विशाल रेंज का ऑप्शन मौजूद है। किसी भी विषय में कोई भी ऐसा कोर्स कर सकते हैं जिस विषय साधारण कक्षा में नहीं हो सकता है। ऑनलाईन प्रोग्राम्स सफलता पूर्वक पूरे होने पर विश्वविद्यालय अब सर्टिफिकेट और डिग्री देने लगा हैं। अब छात्रों किसी भी प्रसिद्ध कॉलेज या यूनिवर्सिटी के प्रोग्राम में शामिल हो सकते हैं और अपना कोई भी करियर बना सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षण बच्चों को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशीला बनाता है और अन्य संस्कृतियों में आसानी से फिट होने में सक्षम होता है जिससे वे अन्य संस्कृतियों के संपर्क में आ जाते हैं। ऑनलाइन शिक्षण विभिन्न कारणों से कम खर्च में कर सकते हैं जैसे आने, जाने की कोई कीमत नहीं है, समय बच जाता है।

छात्र अध्यापकों के शब्दों की करीब समीक्षा कर सकते हैं या आडियो या वीडियों को वापस रुनके आसानी से समझ सकते हैं। कक्षा के वातावरण में कई छात्र सार्वजनिक रूप में बोलने में सहज नहीं होते हैं। यह ऑनलाइन वातावरण में विचारों को आसानी से प्रकट करते हैं। छात्र को अपने विचारों के बारे में सोचने और सम्मान करने के लिए बहुत समय मिलता है।

इस महामारी के बुरे दौर में समय का सही सदुपयोग कर शिक्षा प्राप्त करना सिर्फ ऑनलाइन में ही संभव है और इसका शिक्षण प्राप्ति में सही उपयोग हो रहा है। आज दुनिया के सारे देशों के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग से आसानी से पढाई कर रहे हैं।

आज वास्तव में हमारा अभिन्न अंग है क्योंकि संसार रूपी समुद्र में जीवन के सुचारु संचालन तथा मंगलमय जीवन के लिए शिक्षा अनिवार्य है और छात्र रूपी नौका इसी के दुवारा किनारा लगती है। इसलिए यह आज के समय अभिन्न अंग बन चुकी है।

कोरोना के समय भले ही आज जिंदगी महँगी और दौलत सस्ती हो गई है लेकिन ऑनलाइन शिक्षा से ही छात्र के ज्ञान में वृद्धि हो रही है।

यह मेरी मूल रचना है।

Rajalakshmi

वर्ग - ग

146

(9)

46/50 अनुराधा 23/01/2021

NAME: KANNAGI ELANGOVAN
EMPID: 2492
DESIGNATION: PREPARATORY TEACHER (S.S)

AECS-1, TARAPUR

निबंध लेखन

शीर्षक : ऑनलाइन शिक्षण - विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग

शिक्षा हम सब के जीवन का अभिन्न अंग है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षण का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान परिस्थिति में सभी क्षेत्र के लोगों को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। करोना के वजह से हुआ लॉकडाउन से सभी क्षेत्र बाधित हो रहा है। उसमें सब से पहला स्थान शिक्षा का आता है। सरकार बच्चों के लेकर कोई जोखिम नही लेना चाहती है। बच्चों के सेहत के साथ उनका शिक्षा का भी जरूरी है। इसलिए आनलाईन शिक्षण से बच्चो को शिक्षा दी जा रही है। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है। जहॉ शिक्षक एंव बच्चे इंटरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। और घर से अपना शिक्षण कर सकता है, शिक्षक जूम, गुगल मीट, व्हाट्सप्प इत्यादि एप्प के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते है।

करोना काल के संकट से पूरी दुनिया थम सी गई है।

लॉकडाउन के इस काल में जहाँ सभी विद्यालय, कॉलेज और कोचिंग सेंटर बंद है वहां ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी दुनिया भर में जगह बना ली है। शिक्षक बच्चों को लिंक भेजते है। जिस के माध्यम से बच्चे लेपटॉप मोबाइल, कंप्यूटर, स्मार्ट टी वी पर शिक्षक को देख और सुन सकते है। लेकीन इंटरनेट न होने पर शिक्षा बाधित भी हो सकता है! जहाँ इंटरनेट की सुविधा न हो वहां ऑनलाईन शिक्षा नही हो सकता। ग्रामीण इलाकों में जहाँ नेटवर्क नही होता है वहां के शिक्षक और बच्चों को इसे अपनाने में कोई फायदा नही है।

लॉकडाउन के वजह से लोग अर्थिक तंगी से भी परेशान है। सभी क्षेत्र बाधित है। ऐसे मे चाहे वो मध्यमवर्गीय परिवार या कोई गरिब परिवार उनका सामान्य जीवन के आवश्यकतों को पूरा करने के लिए पैसे नही है। वे अपने घरों मे बच्चों को न तो लेपटॉप, न मोबाइल खरीद सकते है। न इंटरनेट की सुविधा, घर मे एक ही मोबाईल होता है तो घर में अगर दो बच्चों में किसे दे ऑनलाइन शिक्षण की सुविधा यह भी बडी मुसीबत है। वे अपने बच्चों को पेट भर खाना दे या ऑनलाइन शिक्षण के साधन

उपलब्ध करेगें। आज के इस परिस्थिति मे कोई और मार्ग भी नही है। इसलिये सभी वर्ग के बच्चों तक किसी न किसी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। जैसे रेडिओ, टेलिविजन, व्हटस्एप्प, गुगल मीट, बच्चे भी अपने सुविधा अनुसार ऑनलाइन शिक्षण प्राप्त कर रहे है।

ऑनलाइन शिक्षण का प्रचलन काफी समय से चल रहा था। लेकिन आज के करोना काल मे यह अनिवार्य हो गया है। ऑनलाइन शिक्षण नौकरी पेशा लोगों के लिये अच्छा माध्यम है जहां वे अपने नौकरी के साथ-साथ शिक्षा भी कर सकते है।

ऑनलाइन शिक्षण से बच्चों की सेहत पर बुरा असर पर रहा है। बच्चों की शारीरिक और मानसिक सेहत पर असर होने लगा है। बच्चों को इन दिनों आखों मे तकलिफ और सिरदर्द भी हो रहा है। कुछ बच्चों के स्वभाव मे चिड़चिड़ापन आया है जो अभिभावकों की चिंता का विषय बन गया है। बच्चों को मोबाईल की लत लग गई है वे अपन क्लास के बाद भी मोबाईल मे गेमस और चैटींग करते है। बच्चो को ही नही शिक्षकों के सेहत पर भी असर पढ़ रहा है।

विद्यालय मे जब बच्चे रोज आते है तो इनका सर्वांगीण विकास होता है। जो अब ऑनलाइन शिक्षण मे यह बाधित हो गया है। विद्यालय मे बच्चे पढाई के साथ-साथ संगीत, खेल, नृत्य, नाटक, इत्यादि मे अपने रुची अनुसार भाग लेते है। और अपने कला से सब दोस्तों को भी प्रेरित करते है। साथ साथ इनकी नैतिक शिक्षा भी प्राप्त करते है जो ऑनलाइन में संभव नही है। ऑनलाइन शिक्षण से न तो शिक्षक संतुष्ट है न ही बच्चे अपनी पढाई अच्छी तरह कर पा रहे है। ऑनलाइन शिक्षण सिर्फ एक विकल्प है जो इस करोना काल मे इस्तमाल किया जा रहा है।

मेरा यह मानना है कि कोई भी लैपटॉप, टॅब, मोबाईल चॉक और डस्टर की जगह नही ले सकता है। बच्चे का सर्वांगीण विकास विद्यालय मे अपनी शिक्षक के कलास मे ही हो सकता है। कोई भी एप्प एक ऑफलाइन शिक्षण नही ले सकता है। इस लिए यही प्रार्थना है मेरी की सब कुछ पहले जैसे हो जाय और हम ऑनलाइन से ऑफलाइन मे विद्यालय मे बच्चों को अपने कक्षाओं पढायें।

यह मेरी मूल रचना है।